Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
April to June 2024, E-Journal, Vol. I, Issue XLVI, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

आदर्श की प्रतिमूर्ति राम

यशवंत काछी* डॉ. राजेंद्र सिंह**

*** शोधार्थी, तुलनात्मक भाषा एवं संस्कृति अध्ययनशाला, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर (म.प्र.) भारत**
**** विभागाध्यक्ष, तुलनात्मक भाषा एवं संस्कृति अध्ययनशाला, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर (म.प्र.) भारत**

शोध सारांश – ईश्वर द्वारा विरचित इस समूचे ब्रह्मांड में पृथ्वी उस मायापति की सबसे सुंदर रचना है। इस धरा पर मनुष्यों ने कितने ही साध्य और असाध्य कार्यों को पूरा किया है। इन क्रियाकलापों के कारण एक साधारण सा मनुष्य महामानव, महापुरुष और महात्मा जैसी संज्ञाओं से विभूषित किया जाता रहा है। आदिम काल से लेकर वर्तमान काल तक इस धरती पर बहुत से महापुरुषों ने जन्म लिया। जिन्होंने मानव समाज के लिए कल्याण का मार्ग प्रशस्त किया। इन्हीं महापुरुषों में से एक ऐसे महामानव का नाम जीवन को सफल बनाने का मंत्र बन गया है। यह महान व्यक्तित्व मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के नाम से संपूर्ण विश्व में जाना जाता है। राम का चरित्र समस्त चराचर के प्राणियों का पथ प्रदर्शक है। राम के चरित को लेकर कुछ मंदबुद्धि लोगों के द्वारा न जाने कितने ही आक्षेप लगाये गए, फिर भी ऐसे लोग राम की सुंदर छवि को धूमिल नहीं कर पाए। इसका कारण राम का सुंदर आचरण, उच्च आदर्श और कल्याणकारी कृत्य हैं।

शब्द कुंजी – आदर्श, मर्यादा, समाज, आचरण, वर्गभेद।

प्रस्तावना – राम का नाम सुनते ही हमारे समक्ष मर्यादा और आदर्शों के रंगों से बनाई गई, छवि उभर जाती है। हमारे सामने एक ऐसा व्यक्तित्व प्रकट होता है, जिसका सम्पूर्ण जीवन आदर्शों, मर्यादाओं, दया, करुणा, प्रेम, करुणा, कृपा आदि गुणों का महाकाव्य है। जिसका हृदय मानवता के अमृत से सराबोर है। जो अपने शत्रु से भी अनुनय-विनय करने को तत्पर रहता है, जो एक पक्षी (जटायु) को पितातुल्य मानकर उसके प्रति अपने पुत्रकर्म को विधिपूर्वक निर्वाहता है, जो दलितों, वंचितों को अपने गले लगाता है और उनके जूठे बेर भी खाता है, जो प्रकृति का सम्मान अपनी माँ की तरह से करता है और वानर, भालू और रीछों को अपना सहायक बना लेता है, जबकि वो एक चक्रवर्ती सम्राट का पुत्र है। राम का जीवन उदारता से परिपूर्ण है। जो अपने शत्रु के भाई को भी अपना मित्र बना लेता है। राम का सम्पूर्ण चरित्र ही हमें कुछ-न-कुछ सीख देता रहता है। यदि हम राम के बारे में यह कहें कि राम का चरित्र प्रेरणा का अजस्र स्रोत है। वह बहुरंगी एवं बहुआयामी मानवीय संबंधों को मर्यादा का शिखर प्रदान करता है, तो की बड़ी बात न होगी क्योंकि राम की कथा तो अनंत गुणों की खान होने के कारण अनंत है। इस संदर्भ में मानसकार लिखते हैं-

'हरि अनंत हरि कथा अनंता।
कहहिं सुनहिं बहुबिधि सब संता।।'[1]

लोगों के मन में यह प्रश्न उठता है कि राम में ऐसी कौन सी विशिष्टता है, जो राम को लोग इतना पूजते और मानते हैं? इस संदर्भ में आम जनमानस का उत्तार होता है कि उन्होंने भक्तों की रक्षा की और उनका उद्धार किया है। उन्होंने दुष्टों पर भी कृपा करके अपना परमधाम दिया है, जो ऋषि-मुनियों को भी दुर्लभ होता है। इस पर यह तर्क आता है कि पतितों, भक्तों और दुष्टों उद्धार और सज्जनों की रक्षा तो भगवान के प्रत्येक अवतार ने की है। फिर राम में ऐसा कौन सा गुण है, जिस कारण से वह हिंदू मानस के शिरोधार्य बने हुए हैं? तब इसका उत्तर इस प्रकार से दिया जा सकता हैं, कि 'सनातन काल से हिंदू मन पारिवारिक और सामाजिक संबंधों में उदात्ता आचरण को महत्व देता रहा है। राम ने अपने आचरण में घोर विपत्तियों को सहते हुए भी श्रेष्ठ पारिवारिक-सामाजिक मूल्यों को जिया। अत: हिंदू मन ने उन्हें सिर-माथे उठा लिया। राम का चरित्र हिंदू हृदय का सर्वाधिक वंदनीय आदर्श बन गया। राम जिन आदर्शों के लिए जिये, उन आदर्शों को तोड़ने वाले को हिंदू मन ने कभी क्षमा नहीं किया। कैकेयी और विभीषण इसके ज्वलंत उदाहरण हैं।'[2] आज भी रामकथा के इन दोनों पात्रों के प्रति जनमानस के मन में आदरभाव नहीं है। कोई व्यक्ति अपने पुत्र-पुत्री का नाम विभीषण और कैकेयी नहीं रखता है। त्रेता युग से लेकर वर्तमान युग तक इन दोनों के पश्चात् अन्य किसी का नाम इनके नाम पर नहीं रखा गया है। संसार का कोई भी समुदाय स्वनिर्मित उदात्त आदर्शों की अवहेलना नहीं सहता है। जो भी व्यक्ति समाज के उच्चतम आदर्शों की अवमानना करता है। वह समाज की दृष्टि से उतर जाता है और विरोधी समझा जाने लगता है। राम की महत्ता इसी रूप में सबसे अधिक है कि राम के आदर्श भारतीय समाज के आदर्श बन गये। जिस प्रकार अपने प्रिय भोजन का नाम सुनते ही जिह्वा को उसका रसास्वाद अनुभूत हो उठता है, उसी प्रकार राम का स्मरण करने मात्र से राम के आदर्श और गुण हमारे सामने प्रकट हो जाते हैं।

राम का चरित्र एक आदर्श पुत्र, शिष्य, भाई, प्रेमी, पति, मित्र, शत्रु और स्वामी की छवि प्रकट करता है। राम का जीवन आदर्शों की पराकाष्ठा की सीमा है। राम के अतिरिक्त शायद ही अन्य कोई ऐसा हुआ हो, जिसने अपने जीवन में समस्त संबंधों और कर्तव्यों का निर्वाह करते हुए, अपने श्रेष्ठ आदर्शों को अक्षुण्ण रखा हो। राम एक साधारण मानव की तरह ही अपना जीवन-यापन करते हैं, लेकिन उनमें एक मर्यादा है, जो उन्हें मर्यादा पुरुषोत्तम बनाती है।

वर्तमान समय में पिता-पुत्र के संबंधों में जिस प्रकार का तनाव, दूरियाँ और मनमुटाव देखने को मिल रहा है। उसका एकमात्र कारण समाज में संस्कारों

की क्षीणता है। दिन-प्रतिदिन संस्कार और संस्कृति पश्चिमी सभ्यता के अंधानुकरण के कारण लुप्त होते जा रहे हैं। जब हम किसी ऐसी संस्कृति का अनुसरण करने लगते हैं जो हमें अपनी जड़ों से दूर करती है, तो ऐसी स्थिति में हम अपनी संस्कृति को भूलकर स्वयं के विकास का पथ अवरुद्ध कर लेते हैं। यदि एक आदर्श पुत्र के गुणों को समझना और जानना है, तो इसके लिए राम से श्रेष्ठ कोई उदाहरण नहीं सकता है। जिसका सम्पूर्ण जीवन ही आदर्शों की समुचित परिभाषा रहा है। हमारी संस्कृति में माता-पिता और गुरु को ईश्वरतुल्य माना गया है। जिनके चरणों में स्वर्ग है, उन चरणों का वंदन करके राम अपने दैनिक कार्यों को आरंभ करते हैं। वे प्रात:काल जागकर सर्वप्रथम माता-पिता और गुरुजनों को प्रणाम करते हैं।

'प्रातकाल उठि कै रघुनाथा।
मातु पिता गुरु नावहिं माथा।।'[3]

जब माता कैकेयी दुर्बुद्धि पाश में फँस जाती हैं और उसी के वशीभूत होकर अपने दो पूर्व वरदानों को राजा दशरथ से माँगती हैं। उन दो वरदानों में वे दशरथ से राम के लिए चौदह वर्ष का वनवास और भरत के लिए राज्य सिंहासन माँग लेती हैं। ऐसी विचित्र वरदानों को सुनकर विशेषकर राम के वनवास का वर सुन दशरथ मूर्च्छित होकर गिर पड़ते हैं। वहाँ से आकर कैकेयी ने जब राम से कहा कि महाराज ने तुम्हें चौदह वर्ष का वनवास दिया है, तो राम इस बात से क्रुद्ध या क्षुब्ध नहीं हुए। बल्कि उन्होंने प्रसन्नतापूर्वक अपने पिता की आज्ञा को शिरोधार्य किया और कैकेयी से मधुर वाणी में कहा-

'सुनु जननी सोइ सुतु बड़भागी।
जो पितु मातु बचन अनुरागी।
तनय मातु पितु तोषनिहारा।
दुर्लभ जननि सकल संसारा।।'[4]

जब राम के वन गमन की सूचना माता कौशल्या के मिलती है, तो अत्यंत दुखी होती हैं। राम अपनी माता को समझाते हुए, वो बात कहते हैं, जो राम से पहले न राम के बाद किसी ने कहे होंगे। वे माता कौशल्या से कहते हैं माता आप शोक न कीजिये। पिताश्री ने तो मुझे इस राज्य के बदले में जंगल का राज्य दे दिया है और राम अपने माता-पिता की आज्ञा का पालन करते हैं। इस संदर्भ में तुलसी बाबा लिखते हैं -

'पिताँ दीन्ह मोहि कानन राजू।
जहँ सब भाँति मोर बड़ काजू।।'[5]

जब हम राम की आदर्शवादी शिष्य की झाँकी को देखते हैं, तो पाते हैं कि राम अपने गुरुओं अपने हृदय के सिंहासन पर विराजित किये हुए हैं। वे गुरुओं के प्रति मात्र औपचारिकता का धर्म नहीं निभाते हैं। वह कभी ऐसा नहीं कहते कि गुरुदेव आदेश कीजिये, मैं अयोध्यावासियों, भरत, लक्ष्मण, शत्रुघ्न या पिताश्री से कहकर आपका कार्य करवा दूँगा। वे गुरु के आदेश के पालन हेतु स्वयं तत्पर रहते हैं। राम सदैव ही अपने गुरुजनों की आज्ञा का पालन करते हैं। वे गुरु वशिष्ठ से कहते हैं -

'प्रथम जो आयसु मो कहुँ होई।
माथें मानि करौं सिख सोई।
पुनि जेहि कहँ जस कहब गोसाईं।
सो सब भाँति घटिहि सेवकाईं।।'[6]

जब राम और लक्ष्मण, ऋषि विश्वामित्र जी के आश्रम में मुनियों की रक्षा करने और शिक्षा प्राप्त करने जाते हैं, तो गुरु के सोने से पहले उनके चरणों को दबाते हैं और जब तक गुरुवर बार-बार आज्ञा नहीं देते तब-तक दोनों भाई शयन नहीं करते हैं तथा गुरु से पहले जाग जाते हैं। इस प्रसंग में गोस्वामी तुलसीदास जी लिखते हैं -

'जिन्ह के चरन सरोरुह लागी।
करत बिबिध जप जोग बिरागी।
तेइ दोउ बंधु प्रेम जनु जीते।
गुरु पद कमल पलोटत प्रीते।
बार बार मुनि अग्या दीन्ही।
रघुबर जाइ सयन तब कीन्ही।।'[7]

राम का भ्रातृत्व तो संसार में अद्वितीय बन पड़ा है। वह अपने भाइयों से अपार स्नेह करते हैं। बाल्यकाल से राम का अपने भ्राताओं के लिए प्रेम रामचरितमानस में देखा जा सकता है।

'अनुज सखा सँग भोजन करहीं।
मातु पिता अग्या अनुसरहिं।।'[8]

आज जहाँ एक ओर संपत्ति के लिये मानव अपने पवित्र-रिश्तों और सुमधुर संबंधों को तार-तार कर रहा है। धन की लालसा में एक भाई दूसरे भाई का गला घोंट रहा है। ऐसे मनुष्यों को राम के चरित्र से भ्रातृत्व प्रेम की सीख लेना चाहिए। राम ने जब सुना कि भरत को पिताश्री ने अपने राज्य का अधिपति बनाने का वचन माता कैकेयी को दिया है, तो वे अत्यंत ही हर्षित हो उठते हैं। राम अपने भाग्य की सराहना करते हैं और कहते हैं कि विधाता सब प्रकार से मेरे अनुकूल हैं।

'भरतु प्रानप्रिय पावहिं राजू।
बिधि सब बिधि मोहि सनमुख आजू।।'[9]

राम का अपने अनुजों के प्रति अनन्य प्रेमभाव देखने को मिलता है। वह लक्ष्मण को मूर्च्छित देखकर भारी विलाप करते हैं और कहते हैं कि यहाँ आने से अच्छा था कि मैं अपने पिता की आज्ञा नहीं मानता। जब में यहाँ से अयोध्या लौटकर जाऊँगा तो कौन-सा मुँह लेकर जाऊँगा, लोग मेरा परिहास करेंगे और कहेंगे देखो अपनी भार्या के लिए प्रिय भ्राता को खो दिया।

'जैहउँ अवध कवन मुहु लाई।
नारि हेतु प्रिय भाइ गँवाई।।'[10]

राम अपने जीवन में एक कृतज्ञ पुरुष के रूप में सामने आते हैं। वे अपने प्रति किये गए उपकारों को भूलते नहीं है। जब हनुमान द्रोणागिरि पर्वत लाकर लक्ष्मण के प्राण बचाते हैं, तब राम अपनी कृतज्ञता प्रकट करते हुए कहते हैं कि-

'एकैकस्योपकारस्य प्राणान् दास्यामि ते कपे।
शेषस्येहोपकारणां भवान् ऋणिनो वयं।।
मदङ्गेजीर्णतां यातु यत्त्वयोपकृतम् कपे।
नर: प्रत्युपकाराणामापत्स्वायाति पात्रताम्।।'[11]

लंका के युद्ध में जिन वानर-भालुओं और रीछों ने अपने प्राण त्याग दिये थे। राम उनके उपकार को भी नहीं भुलाते हैं। रावण वध के बाद इन्द्र ने आकर राम की स्तुति की और आदेश माँगा। तब राम सभी को जीवित करने को कहते हैं-

'मम हेतो: पराक्रांता ये गता यमसादनम।
ते सर्वे जीवितम् प्राप्य समुत्तिष्ठंतु वानरा:।।
'मत्कृते विप्रयुक्ता ये पुत्रैदरैश्च वानरा:।
तान् प्रीतमनस: सर्वान् द्रष्टुमिच्छामि मानद।।'[12]

संसार भर में यदि पारिवारिक संबंधों के अतिरिक्त कोई संबंध जो अत्यंत प्रगाढ़ रूप में सामने आता है, तो वह मित्रता का संबंध है। सच्ची मित्रता में रंगभेद, वर्णभेद, जातिभेद, अमीरी–गरीबी और छुआछूत जैसी दुर्बल मानसिकताओं के लिए कोई स्थान नहीं है। मित्र के रूप में राम का चरित्र मित्रता की पराकाष्ठा के रूप में सामने आता है। मित्रता की ऊँचाई का जो सर्वोच्च शिखर हो सकता है, वह राम है। मानसकार ने तीन लोगों से राम की घनिष्ठ मित्रता का वर्णन किया है। जिनमें पहले निषादराज, दूसरे सुग्रीव और तीसरे विभीषण जी हैं। निषाद से मित्रता कर राम ने जातिभेद और अमीरी–गरीबी के सामाजिक भेदभाव को व्यर्थ सिद्ध कर दिया। सुग्रीव से मित्रता कर प्रकृति से सामंजस्य का पाठ पढ़ाया और विभीषण से मित्रता कर वर्ण एवं वर्गभेद को नकार दिया तथा मित्रता की एक नई मिसाल कायम की। राम मित्रभाव को सर्वोपरि समझते हैं और उसके लिए सबकुछ करने के लिए तैयार भी रहते हैं। राम की दृष्टि में सच्चा मित्र वही है, जो हार परिस्थिति में मित्र का साथ दे। राम के इसी भाव को पुष्ट करते हुए बाबा तुलसी लिखते हैं–

'जे न मित्र दुख होहिं दुखारी।
तिन्हहि बिलोकत पातक भारी।'[13]

राम अपने मित्रों को अपने भ्रातृतुल्य मानते हैं। जब राम राज्याभिषेक के बाद सभी को विदा करते हैं, तो वे निषाद को विदा देते हुए कहते हैं–

'तुम्ह मम सखा भरत सम भ्राता।
सदा रहेहु पुर आवत जाता।'[14]

राम का चरित्र मर्यादा का अनूठा उदाहरण है। राम ने अपने जीवन में केवल सीता से प्रेम किया और उनको ही अपनी जीवनसंगिनी के रूप में चुना। राम का प्रेमी और पति रूप भी आदर्श की डोर से बंधा हुआ है। राम सीता को अत्यंत प्रेम करते हैं और यह प्रेम उन्हें सीता के पहले ही दर्शन में हो जाता है। पुष्प वाटिका में राम और सीता का मिलन प्रेम, आदर्श और मर्यादा का अनुपम दृष्टांत है। सीता की छवि में राम के नयन अटक जाते हैं और उनके मुख से कोई भी वचन नहीं निकलता है–

'देखि सीय सोभा सुख पावा।
हृदय सराहत बचनु न आवा।।'[15]

सीता के प्रति अपने प्रेम को अभिव्यक्त करते हुए राम अपने छोटे भाई लक्ष्मण से अपने मन की बात कहते हैं। इस छटा को तुलसीदास जी बड़े ही अनूठे ढंग से दिखाते हैं–

'करत बतकही अनुज सन मन सिय रूप लोभान।
मुख सरोज मकरंद छबि करइ मधुप इव पान।'[16]

भारतीय संस्कृति में पति को पत्नि के द्वारा परमेश्वर के रूप में पूजा जाता है। एक आदर्श पति का कर्त्तव्य होता है कि वह अपनी पत्नि के प्रति सारी जिम्मेदारियों और उसकी इच्छाओं को कपटरहित मन से पूरा करे तथा उसके प्रति अपना विशेष प्रेम रखे। जब एक कन्या पिता के घर से विदा होकर अपने पति के घर आती है, तो उसका पति ही उसके सुख–दुख का सच्चा साथी होता है। राम का पति प्रेम एक आदर्श पति का चरम बिंदु है। उन्होंने अपने जीवन में पतिधर्म के दायित्व का निर्वाह बखूबी किया है। वह सीता के सुख–दु:ख में बराबर के हिस्सेदार होते हैं। जब राजा दशरथ के द्वारा राम को चौदह वर्ष का वनवास दिया जाता है, तो सीता एवं लक्ष्मण राम के जाने की हठ ठान लेते हैं और राम के साथ वनगमन करते हैं। मार्ग में सीता प्यास से व्याकुल हो उठती हैं। उनके माथे पर स्वेदबिंदु झलकने लगते हैं, तब सीता पूछती हैं कि हम कितनी दूर चलकर कुटिया बनाएंगे। सीता की स्थिति को देखकर राम की आँखों से अश्रु छलक जाते हैं। इस दृश्य का वर्णन तुलसीदास जी ने बड़े ही मार्मिक ढंग से किया है। वे लिखते हैं–

'पुरतें निकसीं रघुबीर बधू धरि धीर दए मग में डग द्वै।
झलकीं भरि भाल कनी जलकी पुट सूख गए मधुराधर वै।
फिरि बूझति चलनो अब केतिक पर्नकुटी करिहौ कित ह्वै।
तिय की लखि आतुरता पिय की अँखियाँ अति चारु चलीं जल च्वै।।'[17]

जब राम की दृष्टि सीता के चरणों पर पड़ती है, जिनमें मार्ग में चलते हुए कंटक चुभ गए हैं, तो वे रो पड़ते हैं और उनके उर में वही कसक उठती है, जो कसक कंटकों से सीता के पैरों में उठ रही है। राम बिना विलंब किये सीता के पैरों के तलवों से काँटे निकालते हैं। अपने पति के इस अभूतपूर्व व निस्वार्थ प्रेम को देखकर सीता की देह पुलकित हो जाती है और उनके नेत्रों में जल भर आता है।

'तुलसी रघुबीर प्रियाश्रम जानि कै
बैठि बिलंब लौं कंटक काढ़े।
जानकी नाहको नेहु लख्यो,
पुलको तनु, बारि बिलोचन बाढ़े।'[18]

निष्कर्ष– राम की कथा तो वास्तव में अनंत ही है। जिसको कितना भी गाया, लिखा, पढ़ा और सुना जाए फिर भी वह अपनी पूर्णता को प्राप्त नहीं हो पाती है। राम के चरित्र को जितना अधिक समझा जाता है, उतनी ही बार एक नई कहानी हमें मिल जाती है। प्रत्येक गाथा में राम का आदर्श और मर्यादित स्वरूप ही मिलता है। अत: हम निष्कर्षत: कह सकते हैं कि राम का चरित तो सत्य ही आदर्श की प्रतिमूर्ति ही है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:–

1. रामचरितमानस, बालकांड, टीकाकार– हनुमानप्रसाद पोद्दार, गीताप्रेस, गोरखपुर।
2. हरि कथा अनंता, राजेंद्र अरुण, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. रामचरितमानस, बालकांड, टीकाकार– हनुमानप्रसाद पोद्दार, गीताप्रेस, गोरखपुर।
4. रामचरितमानस, अयोध्याकांड, टीकाकार– हनुमानप्रसाद पोद्दार, गीताप्रेस, गोरखपुर।
5. रामचरितमानस, अयोध्याकांड, टीकाकार– हनुमानप्रसाद पोद्दार, गीताप्रेस, गोरखपुर।
6. रामचरितमानस, अयोध्याकांड, टीकाकार– हनुमानप्रसाद पोद्दार, गीताप्रेस, गोरखपुर।
7. रामचरितमानस, बालकांड, टीकाकार– हनुमानप्रसाद पोद्दार, गीताप्रेस, गोरखपुर।
8. रामचरितमानस, बालकांड, टीकाकार– हनुमानप्रसाद पोद्दार, गीताप्रेस, गोरखपुर।
9. रामचरितमानस, अयोध्याकांड, टीकाकार– हनुमानप्रसाद पोद्दार, गीताप्रेस, गोरखपुर।
10. रामचरितमानस, लंकाकांड, टीकाकार– हनुमानप्रसाद पोद्दार, गीताप्रेस, गोरखपुर।
11. वाल्मीकि रामायण (7/ 4./ 23–24), निर्णय सागरप्रेस, बंबई।
12. वाल्मीकि रामायण, (6/ 12./ 5–6), गीताप्रेस, गोरखपुर।

13. रामचरितमानस, किष्किंधाकांड, टीकाकार– हनुमानप्रसाद पोद्दार, गीताप्रेस, गोरखपुर।
14. रामचरितमानस, उत्तरकांड, टीकाकार– हनुमानप्रसाद पोद्दार, गीताप्रेस, गोरखपुर।
15. रामचरितमानस, बालकांड, टीकाकार– हनुमानप्रसाद पोद्दार, गीताप्रेस, गोरखपुर।
16. रामचरितमानस, बालकांड, टीकाकार– हनुमानप्रसाद पोद्दार, गीताप्रेस, गोरखपुर।
17. कवितावली, अयोध्याकांड, अनुवादक– इंद्रदेव नारायण, गीताप्रेस, गोरखपुर।
18. कवितावली, अयोध्याकांड, अनुवादक– इंद्रदेव नारायण, गीताप्रेस, गोरखपुर।

****